श्रद्धेय डा. विश्वामित्र जी महाराज के मुखारविन्द से......
लुधियाना (पंजाब) २६ नवम्बर, २००२ प्रातः ६.३० बजे

शास्त्र कहता है जिन्दगी में, दीक्षा गुरू एक होता है, शिक्षा गुरू अनेक हो सकते हैं. दीक्षा गुरू एक. दीक्षा मात्र माला देने व माला लेने को नहीं कहा जाता. स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, 'यह एक रहस्यवाद है. गुरू या सुगड सन्त के अतिरिक्त, इस भेद को कोई नहीं जानता. ऊपरी स्वरूप तो बेशक यही दिखाई देता है लेकिन भीतर की क्रीया बडी गोपनीय, गंभीर और बहुत गहन है.'

आप की श्रद्धा की कसौटी यह होनी चहिए, जिस स्थान पर जाते हो, जिस की शरण में जा रहे हो, क्या उसकी शरण में जाने से मेरी भक्ती सूख तो नहीं रही? यदी भक्ती सूख रही है तो, ऐसा स्थान भी बेकार, ऐसा व्यक्ती भी बेकार। वह तो, संसार से निकालने की बजाए आपको, और संसार रूपी दल दल में धकेल रहा है।

जिसकी लौ, असली जगह पर, लग जाती है, उसके सारे शेष काम परमात्मा स्वयं करता है। कोई हो न, माई का लाल, जो इसको परख कर देखे। जब परमेश्वर, आपको पकड लेता है, आपका श्वास, प्रश्वास, मल त्याग, मूत्र त्याग, आदी हर चीज पर, परमात्मा का नियन्त्रन होता है।

परमेश्वर कृपा का क्या चिन्ह होता है? क्या दुर्गुण दूर हो रहे हैं, कि नहीं हो रहे? सीधी सी कसौटी है। अपने भीतर झांक कर देखो। ठोक बजा कर कहता हूँ, साधक जनों ! धनवान हो जाना, पूंजीपती हो जाना, उद्योगपती हो जाना, ये परमेश्वर की कृपा का चिन्ह नहीं है। परमेश्वर की कृपा तो यह है - अधिक से अधिक नाम जपने को मन करता रहे। स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, 'सपने में भी न बिसरे नाम।' क्या अभी भी सांप की तरह फूंकारे मारते हो या शांत हो कर बैठ गए हो? क्या भीतर अभी भी बदले की भावना है कि शांत हो गई है? क्या अभी ह्रदय में शीतलता, शान्ति, क्षमा, सहनशीलता, आई है कि नहीं आई? क्या अभी भी क्रूरता वैसी ही बनी हुई है? क्या अभी भी दूसरे को दुःख देने की भावना वैसे ही बनी हुई है?

दुख सहने की चीज़ है, सुख देने की चीज़ है, क्रोध पीने की चीज़ है और गम खाने की चीज़ है। देखो यह करके। जीवन किस प्रकार से निहाल होता है?

क्षमा में बहुत बल है, सहनशीलता में बहुत बल है। सहनशीलता यदि जीवन में आ जाती है तो साधक बहुत से गुणों का मालिक बन जाता है। जो सहनशील होगा वह क्षमावान् भी होगा। जो सहनशील होगा वह नम्र भी होगा। जो सहनशील होगा वह निर्वैर भी होगा। उसका किसी के साथ वैर नहीं हो सकता। जो सहनशील होगा वह भीतर से उतना बलवान् भी होगा। यह दुर्बलता का चिन्ह नहीं है। यह वीरता का चिन्ह है, सब कुछ सहन करना।

इस सहनसीलता को, यहां तक ही सीमित न रखिएगा, देवी! आपकी सहनशीलता मात्र इतनी ही नहीं है कि आप अपनी सास के, अपनी बहन के, ननद इत्यादि के कटु शब्द सहन करने वाली हो। यह तो सामान्य व्यक्ति भी कर सकेगा। आपसे, मेरे गुरूजनों को, बहुत ऊँची अपेक्षा है। भीतर क्रोध बैठा हुआ है। भीतर ईर्ष्या बैठी हुई है। क्रोध एंव ईर्ष्या आदि के सारे आवेगों को सहन करना, एक साधक की सहनशीलता है।

परमेश्वर का नाम प्रचुर बल देता है इस उपलब्धि के लिए। धन मांगने से अगर वह धन दे सकता है, माला माल कर देता है। क्षमा धन मांगने से, नाम धन मांगने से क्या आपको क्षमा धनी, नाम की धनी नहीं बनाएगा? क्या सोचते हो कि वह ऐसा करने में असमर्थ है?